राजस्थान में वन

देश के बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों मे वनों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वनो का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में विशेष महत्व है। भू-संरक्षण, जल संरक्षण, मरूस्थल और बाढ़ आदि को नियंत्रित करने एवं देश के औद्योगिक एवं कृषि विकास के लिए वनो का उचित परिमाण में होना आवश्यक है।

किसी भी भौगोलिक प्रदेश मे या भूमि सतह पर वनस्पति का वह आवरण मे जिसके उगने फलने-फूलने तथा विकसित होने मे मानव की कोई भूमिका नही होती, उसे ''प्राकृतिक वनस्पति'' कहते है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वनों के महत्व को समझाते हुए इनके समुचित विकास तथा संरक्षण की और विशेष प्रयास करने के लिए भारत की ''राष्ट्रीय वन नीति 1988 में सम्पूर्ण भू-भाग का 33% क्षेत्र वनाच्छादित करने का लक्ष्य रखा गया था जबकि राजस्थान में भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.53% भू-भाग ही वन क्षेत्र है। जिसमें से भी 4.62% ही वनाच्छादित है।''

राज्य सरकार के वन विभाग की 2011 में जारी रिपोर्ट के अनुसार राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.57 प्रतिशत है।

भारत में राजस्थान ही ऐसा प्रथम राज्य है, जिसमें लगातार चार द्विवार्षिक सर्वे में वृक्षाच्छादित क्षेत्र में लगातार वृद्धि होना पाया गया है।

राजस्थान मे वनों की गिरती स्थिति के प्रमुख कारणों में सबसे प्रमुख है स्वतंत्रता से पूर्व व पश्चात वनों की और ध्यान न देना हालांकि भारत उन देशों में से है जहाँ 1894 से ही वन नीति लागू है। इसे 1952 और 1988 में संशोधित किया गया है। संशोधित वन नीति 1988 का मुख्य आधार वनों की सुरक्षा, संरक्षण और विकास है। इसके मुख्य लक्ष्य है-

- पारिस्थितिकीय संतुलन के सरंक्षण और पुन:स्थापना द्वारा पर्यावरण स्थायित्व को बनाये रखना।
- प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण।
- नदियों, झीलों और जलधाराओं के आवाजाही के क्षेत्र में भूमि कटाव और मृदा अपरदन पर नियंत्रण।
- राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके में तथा तटवर्ती क्षेत्र मे रेत के टीलों के विस्तार को रोकना।
- व्यापक वृक्षारोपण और ''सामाजिक वानिकी कार्यक्रमों के'' द्वारा वन और वृक्ष के आच्छादन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी।
- ग्रामीण और आदिवासी जनसंख्या के लिए ईधन की लकड़ी, चारा तथा अन्य छोटी-मोटी वन-उपज आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कदम उठाना।
- राष्ट्रीय आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए वन उत्पादों में वृद्धि।
- वन-उत्पादों के सही उपयोग को बढ़ावा देना और लकड़ी का अनुकूल विकल्प खोजना।

वनस्पति को प्रभावित करने वाले

- **जलवायवीय कारक।**
- **प्राकृतिक कारक।**
- **जैविक कारक।**

राजस्थान की वनस्पति पर भौतिक व जलवायवीय कारकों का प्रभाव अधिक है।

जलवायवीय कारक

प्राकृतिक वनस्पति पर वहाँ की वर्षा व तापमान का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, विभिन्न प्रकार की वनस्पति जो राज्य के विभिन्न भागों में मिलती है, उसके तथा वर्षा के स्पष्ट सम्बंध दृष्टिगोचर होते है जैसे-

पूर्वी राजस्थान- बांसवाड़ा, बारां मे वर्षा 80 सेमी. तक अत: यहाँ धौकड़ा व महुआ के साथ सागवान व घासे उगती है।

पश्चिमी राजस्थान (पूर्णतया शुष्क/कम वर्षा वाला भाग)- अरावली के पश्चिम में अजमेर, पाली एवं सिरोही क्षेत्र से लेकर जोधपुर तक संक्रामक प्रकार की वनस्पति अर्थात् पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों की मिश्रित वनस्पति मिलती है।

उत्तरी राजस्थान- उत्तरी राजस्थान मे श्री गंगानगर एवं उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान में जैसे- जैसलमेर, गदरारोड़ बाडमेर के कुछ भाग आदि क्षेत्रो में वार्षिक वर्षा 20 सेमी. से भी कम, आधिकांश क्षेत्र में बालू है। अत: इन शुष्क व अर्द्ध:शुष्क प्रदेश मे आधिकांशत: खेजड़ा उगता है।

दक्षिणी राजस्थान- जलवायु अर्धशुष्क, वर्षा 100 सेमी. तक अत: आर्द्र वनस्पति पायी जाती है।

प्राकृतिक कारक

प्राकृतिक वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारको मे मृदा व धरातल मुख्य है। राजस्थान मे पूर्वी भाग में नदियों द्वारा बनायें गए मैदानी व पठारी क्षेत्र है। दशाएं अनुकूल है और परिणामस्वरूप प्राकृतिक वनस्पति यहाँ समृद्ध है। जबकि पश्चिमी क्षेत्र मे बालू के घने टीले पाये जाते है और ये वनस्पति मुक्त रहते है। दक्षिणी भाग में वर्षा अधिक (लगभग 150 सेमी.) होने के कारण वनस्पति सघन मिलती है। उत्तरी भाग मे शुष्कता के कारण वनस्पति खेजड़ी, बबूल इत्यादि रूप मे अर्थात विरल पायी जाती है।

जैविक कारक

राज्य में जैविक कारको का प्रभाव वनस्पति पर विपरित दृष्टिगोचर होता है। भेड़बकरियाँ और चौपायों के बड़े-बड़े समूह के द्वारा अविवेकपूर्ण चराई, वृक्षों की अनियमित रूप से कटाई, खेती के लिए भूमि की सामूहिक सफाई, आदिवासियों द्वारा जंगलों को काट कर 'वालरा कृषि' करना प्राकृतिक वनस्पति विनाश के मुख्य कारण है।

✍ निर्माण कैप्सूल ✍

बीड़- घास के मैदान व चरागाह जिन्हें स्थानीय भाषा मे बीड़ कहते है, विस्तृत रूप से झुन्झुनू, सीकर, अजमेर के अधिकांश भागों मे एवं भीलवाड़ा, उदयपुर और सिरोही के सीमित भागों में पाये जाते है।

- E.S.I. की वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2013 के अनुसार राज्य में कुल वन क्षेत्र में पिछले 2 वर्षो में 98 वर्ग किमी. क्षेत्र की वृद्धि हुई हैं। अब कुल वन क्षेत्र राज्य के कुल क्षेत्रफल 9.57 प्रतिशत हो गया है जबकि 2011 में यह 32639 वर्ग किमी. (9.54 प्रतिशत) था। इस रिपोर्ट के अनुसार वृक्षारोपण में 2011 की तुलना में 412 वर्ग किमी. क्षेत्र की कमी हुई है। वस्तुत: 2011 में प्रदेश में वन व वृक्ष आच्छादित क्षेत्र 24359 वर्ग किमी. था, जो प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र के 7.12 प्रतिशत था। अब राज्य का कुल वनावरण व वृक्षावरण 23946 वर्ग किमी. (कुल भौगोलिक क्षेत्र का 7.00 प्रतिशत) रह गया है।
- भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून की स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट वर्ष 2011 में वर्ष 2009 के सापेक्ष राज्य में कुल 51 वर्ग किमी. वनावरण में अभिवृद्धि अंकित की गई।
- भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट 2013 के अनुसार देश के वन क्षेत्र में 2011 की तुलना में 5871 वर्ग किमी. की निवल वृद्धि हुई हैं।
- राज्य में वन, चारागाह व बंजर भूमि क्रमश: 9.57, 4.94 व 6.94 प्रतिशत है।

राजस्थान का वानिकी परिदृश्य (भारतीय वन रिपोर्ट, 2013 के अनुसार जो 8 जुलाई, 2014 को जारी)

प्रदेश का कुल वन क्षेत्र - 32737 वर्ग किमी.
राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत वन क्षेत्र - 9.57 प्रतिशत
राज्य में आरक्षित वन (Reserved Forest) - 12475 वर्ग कि.मी. (38.11 प्रतिशत)
रक्षित वन (Protested Forest) - 18217 वर्ग किमी. (55.65 प्रतिशत)
अवर्गीकृत वन - 2045 वर्ग किमी. (6.24 प्रतिशत)
अत्यधिक सघन वन क्षेत्र - 72 वर्ग किमी. (0.02 प्रतिशत)
सघन वन क्षेत्र (Moderately Dense Forest) - 4424 वर्ग किमी. (1.29 प्रतिशत)
खुले वन (Open Forest) - 11590 वर्ग किमी. (3.39 प्रतिशत)

राज्य में वन व वृक्षावरण

वर्ग	क्षेत्र (वर्ग किमी. में)	कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत
वृक्षावरण	7860	2.30 प्रतिशत
वनावरण	16086	4.70 प्रतिशत
वन व वृक्षावरण	**23946**	**7.00 प्रतिशत**

राज्य सरकार के वन विभाग द्वारा जारी सूचना (31.3.2014) के अनुसार राज्य की वानिकी स्थिति

प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	-	3,42,239 वर्ग किमी.
प्रदेश का कुल वन क्षेत्र	-	32744.49 वर्ग किमी(राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 9.57 प्रतिशत)
राष्ट्र के भौगोलिक क्षेत्र के सापेक्ष अभिलेखित वन	-	0.99 प्रतिशत
राष्ट्र के वन क्षेत्रफल के सापेक्ष अभिलेखित वन	-	4.25 प्रतिशत
आरक्षित वन क्षेत्र	-	12439.26 वर्ग किमी.
रक्षित वन क्षेत्र	-	18263.02 वर्ग किमी.
अवर्गीकृत वन क्षेत्र	-	2042.20 वर्ग किमी.
प्रति व्यक्ति वन क्षेत्र	-	0.05 हैक्टेयर
राज्य के कुल वन क्षेत्र में सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला जिला	-	उदयपुर (4142.33 वर्ग किमी.)
राज्य के कुल वन क्षेत्र में न्यूनतम वन क्षेत्र वाला जिला	-	चूरू (72.95 वर्ग किमी.)
सर्वाधिक प्रतिशत वन क्षेत्र वाला जिला	-	करौली (जिले के भौगोलिक क्षेत्र का 32.77 प्रतिशत)
न्यूनतम प्रतिशत वन क्षेत्र का विस्तार	-	चूरू (0.43 प्रतिशत)
राज्य में बाँस वाले क्षेत्र का विस्तार	-	2455 वर्ग किमी.
राष्ट्रीय उद्यान	-	3
वन्य जीव अभ्यारण्य	-	26
	-	3 (रणथम्भौर, सरिस्का एवं मुकन्दरा हिल्स)। मुकन्दरा हिल्स 11 अप्रैल, 2013 को टाइगर रिजर्व घोषित।
महत्वपूर्ण पक्षी स्थल	-	24
रामसर स्थल	-	2 (घना पक्षी विहार एवं साँभर झील)
संरक्षित क्षेत्र (कंजर्वेशन रिजर्व)	-	10

वैधानिक दृष्टि से राज्य में वनों की स्थिति : प्रदेश में कुल अभिलेखित वन क्षेत्र 32744.49 वर्ग किमी है। राजस्थान वन अधिनियम 1953 के प्रावधानों के अनुरूप वैधानिक दृष्टि से उक्त वन क्षेत्र निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया हैं-

	वन	अर्थ	क्षेत्रफल	प्रतिशत
(i)	आरक्षित वन (Reserved)	लकड़ी काटने व पशु चराई पर पूर्ण प्रतिबंध	12439.26	37.99
(ii)	रक्षित वन (Protected)	सीमित मात्रा में सूखी लकड़ी की कटाई व पशुचारण की सुविधा	18263.02	55.77
(iii)	अवर्गीकृत वन	निम्न श्रेणी के छितरे वन। पशु चराई व लकड़ी काटने पर प्रतिबंध नहीं।	2042.20	6.24
		कुल योग	**32744.49**	**100**

राजस्थान में वनों का वितरण असमान है। अधिकतर वन दक्षिणी व दक्षिणी पूर्वी भाग में पाये जाते हैं। यहाँ वन्य जीव संपदा भी प्रचुर मात्रा में है। राज्य के कुल वन क्षेत्र का लगभग 50 प्रतिशत भाग केवल 5 जिलों-उदयपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बाराँ, अलवर, करौली, सिरोही व बूँदी में केन्द्रित है, जबकि राज्य के पश्चिमी भाग में अत्यंत कम वन पाये जाते हैं।

वनो का भौगोलिक वितरण

राजस्थान में प्राकृतिक वनस्पति तीन प्रकार की मिलती है- वन, घास तथा मरूस्थलीय वनस्पति।

1. राजस्थान के वन क्षेत्र

मुख्यत: पूर्व व दक्षिण पूर्व मे ही पाये जाते है क्योंकि इन क्षेत्रों मे वर्षा अधिक होती है। इस भाग मे अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर और सिरोही जिले सम्मिलित है मुख्य वृक्ष- सागौन, शीशम, धोंक, सालर, ढाक, पलास, टीमरू, नीम, पीपल, बांस, सीताफल आदि।

2. राजस्थान के घास वाले क्षेत्र

ये क्षेत्र मुख्यत: झुंझुन, सीकर, अजमेर, के अधिकांश भागों में एवं भीलवाड़ा उदयपुर व सिरोही है।

नोट- पोकरण और जैसलमेर के बीच काफी विस्तृत क्षेत्र है, जहाँ विभिन्न जातियों की घास मिलती है लेकिन मुख्य रूप से सावन, धामन और मुरात आमतौर से उगती है। पश्चिमी राजस्थान के शुष्क प्रदेशो के पशुपालन विभिन्न घासों के बोये जाने पर निर्भर करता है।

3. राजस्थान के मरूस्थलीय वनों वाले क्षेत्र

राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र की वनस्पति कांटेदार झाड़ियों से लेकर शुष्क पतझड़ वनों के बीच की विषमता रखती है। इस भू-भाग मे सामान्यत: कीकर, खैर, रामबांस, विलायती बबूल व खेजड़ा इत्यादि पाए जाते है।

वनों का वर्गीकरण

क्र.स.	वन प्रकार	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	कुल वन क्षेत्र का प्रतिशत
1.	शुष्क सागवान वन	2247.87	06.86
2.	अर्द्ध शुष्क उष्ण कटिबंधीय धोंक वन	19027.75	58.11
3.	उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ी मिश्रित वन	9293.65	28.38
4.	उष्ण कटिबंधीय या मरूस्थलीय (कांटेदार) वन	2048.58	6.26
5.	अर्द्ध उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन	126.64	00.39
योग		**32744.49**	**100.00**

वनस्पति और जलवायु का परस्पर गहरा संबंध होता है। इस आधार पर राजस्थान के वनों को निम्न भागों में बांटा गया है-

1. शुष्क सागवान वन (Dry Teak Forests):-

- **सर्वाधिक-बांसवाड़ा**
- ये वन मुख्यत: दक्षिणी राजस्थान में बांसवाड़ा और डूँगरपुर जिलों मं पाये जाते हैं तथा उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा तथा बारां जिलों के कुछ भागों में भी पाये जाते हैं।
- इन वनों में सागवान के वृक्ष अधिक होते है।
- ये कुल वन क्षेत्र के लगभग 6.87 प्रतिशत भाग में फैले हुए है।

2. अर्द्ध उष्ण कटिबंधीय धौंक वन :-

- ये वन अरावली के पश्चिमी क्षेत्रों में पाया जाते हैं।
- सर्वाधिक सीकर झुंझूनू, जालौर तथा जोधपुर जिलों में पाये जाते है। ये राज्य के कुल वन का 58.19 प्रतिशत है।

3. उष्ण कटिबंधीय शुष्क या मिश्रित पतझड़ वन (Mixed Decidious Forests) :-

- इन वनों में मुख्यत: धौकड़ा, खेर, कत्था, तेंदू ऑवला, बंबूल, बरगद, बांस, आम, नीम आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।
- धौकड़ा वृक्ष शुष्क गर्म प्रदेश का वृक्ष होता है। ये वन दक्षिणी- पूर्वी भागों पर मुख्य रूप से उदयपुर, बांसवाड़ा एवं राजसमन्द में पाये जाते हैं।

4. शुष्क या मरूस्थलीय वन (Dry Forests):-

- ये वन मुख्य रूप से बाड़मेर, बीकानेर, पाली, जोधपुर, सीकर, अजमेर, जयपुर, दौसा, झुंझुनँ नागौर आदि जिलों के मैदान में निम्न पहाड़ी ढालों एवं उबड़-खाबड़ भूमियों पर पाये जाते है।
- इन वनों में खेजड़ी रोहिड़ा, बेर, जाल, थोर, बबूल, आदि वृक्ष व झाड़िया उगती है।
- 1983 में राजस्थान का राज्यवृक्ष घोषित खेजड़ी उपयोगी होने के कारण रेगिस्तान का कल्पवृक्ष कहलाता है। बरसात में पैदा होने वाला सेलेसट्रना नामक कीड़ा तथा गाइकोट्रोमा नामक कवक खेजड़ी को खोखला कर देता है।
- विजयदशमी पर खेजड़ी की पूजा की जाती है। खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम प्रोसेपिस सिनेरेरिया है। पुराणों में इसे शमी वृक्ष कहा गया है।
- राजस्थान का राज्य पुष्प रोहिड़ा का फूल है तथा रोहिड़ा के पेड़ को रेगिस्तान का सागवान कहा जाता है।

5. उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन (Sub Tropical Evergreen Forests):-

- ये वन राज्य के कुल वन क्षेत्र के मात्र 0.4 प्रतिशत भाग में पाये जाते हैं। ये केवल आबू पर्वतीय क्षेत्र में पाये जाते हैं।
- पर्याप्त वर्षा के कारण यहाँ वृक्षों की सघनता अधिक होती है। और ये वन सदा हरे-भरे रहते हैं। इन वनों में बांस, आम, जामुन, सिरिस, बेल आदि के वृक्ष मिलते हैं।

अन्य प्रकार के वन :

6. ढाक या पलाश वन :-

- ये वन नदी घाटी की उपजाऊ मिट्टी में पाये जाते हैं।
- इनमें बहेड़ा, महूआ, पीपल, सफेदा करंज, सिरस, गूलर आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।
- ये वन सर्वाधिक राजसमंद, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ व सिरोही जिले में पाये जाते हैं।

7. सालार वन :-

- ये वन अलवर, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़ सिरोही, जोधपुर, जयपुर आदि जिलों में लगभग 10360 वर्ग किमी. क्षेत्र पर मिलते है।

प्रमुख वनस्पतियाँ

खेजड़ी :
- राज्य वृक्ष (31 अक्टूबर, 1983)
- राजस्थान का गौरव
- राजस्थान का कल्पवृक्ष
- सीमलो (राजस्थानी भाषा में नाम)
- जाण्टी (स्थानीय भाषा में नाम)
- शमी (पौराणिक भाषा में नाम)
- प्रोसेपिस सिनेरेरिया (वानस्पतिक नाम)
- पेयमये (तमिल)
- बन्नी (कन्नड़)
- छोकड़ो (सिंधी)
- खेजड़ी की पत्तियों को लूम व फली को सांगरी कहा जाता है तथा जन्माष्टमी व दशहरे पर खेजड़ी वृक्ष की पूजा की जाती है।
- खेजड़ी वृक्ष को सर्वाधिक नुकसान सिलिसट्रेना नामक कीडा गाइकोट्रोमा नामक कवक लगाकर करता है।
- मरूस्थल विस्तार पर रोक लगाने में उपयोगी खेजड़ी वृक्ष के वृक्षारोपण हेतु राज्य सरकार ने रूँख भायला नामक योजना चलाई थी।

रोहिड़ाः
- राज्य पुष्प (31 अक्टूबर, 1983)
- रेगिस्तान का सागवान
- मरू शोभा
- मारवाड़ टीक
- टिकोमैला एड्यूलेटा (वानस्पतिक नाम)
- पश्चिमी राजस्थान में बहुतायत मात्रा में पाये जाने वाले रोहिड़ा से बन्दूक की बट बनती है।
- रोहिड़ा को सर्वाधिक नुकसान जरविल (रेगिस्तानी चूहा) पहुँचाता हैं।
- रोहिड़ा पुष्प का वानस्पति नाम टिकोमैला एड्यूलेटा है। लेकिन रोहिड़ वृक्ष का वानस्पतिक नाम टीनोस्पोरा कार्डिफोलिया है।

पलाश :
- Flame of the forest
- जंगल की आग
- जंगल की ज्वाला
- ढ़ांक (पूर्वी राजस्थान)
- ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (वानस्पतिक नाम)
- पलाश के फूलों का रंग पीला होता है और एक साथ खिलने के कारण जंगल में आग के समान प्रतीत होता है।

महुआ :
- आदिवासियों का कल्पवृक्ष
- मधुका लोंगोफोलिया (वानस्पतिक नाम)
- राजस्थान में बहुतायत मात्रा में पाये जाने वाले वृक्षों के फूल से बनने वाली शराब को मावड़ी कहा जाता है तथा आदिवासियों के लिए टोटम के रूप में इसका सांस्कृतिक महत्व है।

बाँस :
- आदिवासियों का हरा सोना
- दक्षिणी राजस्थान में पाये जाने वाले इस वृक्ष से घरेलू सामान यथा टोकरी, चटाई, चारपाई इत्यादि बनाई जाती है।

तेंदू :
- बीड़ी बनाने में उपयोगी
- डिसोपाइरस मेलोनोक्सालोन (वानस्पति नाम)
- तेंदू पत्ते का 95 प्रतिशत उत्पादन उदयपुर, चित्तौड़, झालावाड़, बाँसवाड़ा, बारां में होता है तथा बीड़ी निर्माण में अजमेर ब्यावर व भीलवाड़ा अग्रणी है।
- 1974 में तेंदू के पत्ते का राष्ट्रीयकरण किया गया था।

खैर :
- कत्था निर्माण में उपयोगी
- ऐनेसिया केकू (वानस्पतिक नाम)
- दक्षिणी राजस्थान की कथौडी जाति खैर वृक्षों से हांडी प्रणाली द्वारा कत्था निर्माण करती है।

धौकड़ा :
- ईंधन की लकड़ी व कोयला निर्माण में उपयोगी
- एनोजिस पंडूला (वानस्पति नाम)
- राजस्थान के वन क्षेत्र में सर्वाधिक मात्रा में पाये जाने वाला वृक्ष धोंकड़ा वृक्ष मुख्यत: विंध्य कगार क्षेत्र में पाया जाता है।

आंवला/झाबूई :
- चमड़ा साफ करने में उपयोगी।
- पशुओं द्वारा आंवला की पत्तियों का सेवन नहीं किया जाता है।

बेर :
- लाख उद्योग में उपयोगी
- बेर की झाड़ी पर लेसिफर लक्खा नामक लाख का कीडा पाला जाता है।

शहतूत :
- रेशम उद्योग में उपयोगी
- शहतूत के वृक्ष पर रेशम का कीड़ा पाला जाता है।

अर्जुन वृक्ष :
- कृत्रिम रेशम में उपयोगी।
- झालावाड़ा में बहुतायत मात्रा में पाये जाने वाले अर्जुन वृक्ष से कृत्रिम रेशम प्राप्त करने की पद्धति को टसर पद्धति कहा जाता है। जो कि कोटा, उदयपुर व बाँसवाड़ा में क्रियान्वित है।

सेवण घास
- राज्य की सबसे लम्बी घास
- लसियूरूष सिडिकुस (वानस्पति नाम)
- लीलोण (स्थानीय नाम)
- सर्वाधिक उपभोग भेड़ों द्वारा
- उत्पादन लाठी सीरीज में

मोचिया /साइप्रस रोटेण्ड्स
- सबसे नरम घास
- सर्वाधिक तालछापर अभ्यारण्य में।

निर्माण कैप्सूल

- इंदिरा प्रियदर्शनी वृक्ष मित्र पुरस्कार वृक्षारोपण के क्षेत्र व परती भूमि विकास के अन्य पक्षों में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष इंदिरा गांधी की जन्म तिथि पर 19 नवम्बर को दिया जाता है।
- राजस्थान में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल उदयपुर जिले में तथा न्यूनतम चूरू जिले में पाया जाता है।
- जिले के क्षेत्रफल के हिसाब से सर्वाधिक वन प्रतिशत करौली जिले में है।
- बाड़मेर जिले का चौहटन क्षेत्र गौंद उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

- तेंदू के पत्तों का उपयोग बीड़ी बनाने के लिए किया जाता है।
- कत्था खेर वृक्ष के तने से बनाया जाता है। कत्था निर्माण बारां जिले के सहरिया आदिवासी क्षेत्र में किया जाता है। इसके अलावा यह राज्य में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी व झालावाड़ जिलों में भी होता है।
- खस नामक घास से ईत्र व शरबत बनाया जाता है। खस घास मुख्यत: टोंक, सवाईमाधोपुर और भरतपुर जिलों में पायी जाती है।
- जैसलमेर के उत्तर-पश्चिम में भारत-पाक सीमा के सहारे 60 किमी. चौड़ी पट्टी लाठी सिरीज क्षेत्र में सेवण घास पायी जाती है। ये मामूली वर्षा में भी उग जाती है। सेवण घास का सर्वाधिक उपयोग भेड़ों द्वारा किया जाता है।
- धामण, करड़ व अंजन भी राजस्थान की घास की किस्में है।
- राज्य में धौकड़ा के वन सर्वाधिक क्षेत्र में फैल हुए हैं। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। सदाबहार वन सबसे कम पाये जाते हैं।
- जैसलमेर के निकट सम पूर्णत: वनस्पति रहित क्षेत्र है।
- अमृता देवी स्मृति पुरस्कार सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है। जौधपुर के गंगाराम विश्नोई इस पुरस्कार के प्रथम विजेता है।
- इससे पूर्व 1603 ई. में जोधपुर जिले के रामासड़ी गांव में 'करमा तक गौरा' नामक दो विश्नाई स्त्रियों ने खेजड़ियों की रक्षा के लिए अपने प्राण उत्सर्ग किये। विश्नोई जाति में वृक्षों को बचाने के लिए प्राणोत्सर्ग करने की परम्परा को खड़ाना कहते हैं।

राजस्थान में वन्यजीव एवं उनका संरक्षण

- राज्य में वन का क्षेत्रफल देश में कई राज्यों की तुलना में कम होने के बावजूद राजस्थान वन्यजीवों की दृष्टि से देश में असम के बाद दूसरे स्थान पर है।
- राजस्थान सरकार के 1972 में भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम पारित करते हुए बिना अनुमति के शिकार को निषिद्ध घोषित किया है।
- वर्तमान में राजस्थान में 5 राष्ट्रीय उद्यान 26 वन्यजीव अभ्यारण्य तथा 33 आखेट निषिद्ध क्षेत्र घोषित किये जा चुके है।
- राजस्थान में बाघो को बचाने के लिए सुनीता नारायण की अध्यक्षता में एक कार्यदल का गठन किया गया था।

राष्ट्रीय उद्यान

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान-

- यह राज्य का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है।
- यह सवाई माधोपुर जिले में स्थित है।
- इसे 1 नवम्ब्र 1980 को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।
- यह लगभग 392 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है।
- वर्तमान में इसका नाम राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान कर दिया गया है।
- 1974 में इस उद्यान को बाघ परियोजना के अंतर्गत चयनित I।
- इसमें राज्य की प्रथम '' बाघ बचाओं परियोजना '' चलाई जा रही है।
- यह देश की सबसे कम क्षेत्रफल की बाघ परियोजना है।
- इस उद्यान में त्रि-गणेशजी का मंदिर देशभर में प्रसिद्ध है।
- रणथम्भौर को शेरों की भूमि कहा जाता है।
- रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क में 6 झीलें हैं, ये- पदम तालाब, रामबाग, मलिक तालाब, मानसरोवर, लाहपुरा गिलाई सागर।
- रणथम्भौर के बाघ परियोजना क्षेत्र को रामगढ़ अभयारण्य (बूँदी) से जोड़ दिया गया है।

2. केवला देव (घना) राष्ट्रीय पक्षी उद्यान :-

- यह राज्य का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान है।
- यह उद्यान भरतपुर जिले में गंभीरी व बाणगंगा नदियों के संगम पर स्थित है।
- 1956 में इसे अभयारण्य का दर्जा प्राप्त हुआ।
- 1981 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया और यूनेस्कों द्वारा वर्ष 1985 में इसे विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया गया।
- आगरा - जयपुर राजमार्ग नं. 11 पर भरतपुर से दो किमी. दूर, यह राष्ट्रीय पक्षी अभयारण्य रामसर कन्वेशन के अनुसार विश्व के नम भूमि क्षेत्रों में अंकित है।
- पानी के पक्षियों के लिए केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त पार्क है। पक्षियों के स्वर्ग के नाम से विख्यात यह पक्षियों की एशिया की सबसे बड़ी प्रजनन स्थली है।
- अभयारण्य का एक तिहाई हिस्सा पानी से भरा रहता है। पानी अजान बांध से प्राप्त होता है।
- विदेशी पक्षी प्रजातियों में मुख्य आकर्षण दुर्लभ, साइबेरियाई क्रेन (सारस) है। इसके अलावा गीज, सफेद मोर, पोचार्ड, लेपबिंग, बेगटेल एवं रोजी पेलीकन इत्यादि आते है।
- अभयारण्य स्थित पाईथन पोइन्ट पर अजगर देखे जा सकते हैं।
- झील के साथ-साथ भूमि पर भी कदम्ब और अकेशिया के पेड़ों के घने जंगल पक्षियों को आकर्षित करते हैं।

3. मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान -

- राज्य का तीसरे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा 9 जनवरी 2012 को दिया गया।
- कोटा तथा चित्तौड़गढ़ जिले में विस्तार है।
- यहां सांभर, नीलगाय, चीतल, हिरण ओर जंगली सूअर पाये जाते है। यह गागरोनी (हीरामन) तोतों के लिए प्रसिद्ध है।
- इस अभयारण्य बाडोली के मंदिर, अबली मीणी का महल स्थित है।
- मुकुन्दरा की पर्वत श्रृंखलाओं में आदिमानव के शैलाश्रय व उनके द्वारा बनाये गये शैलचित्र मिले हैं।

4. राष्ट्रीय मरूउद्यान जैसलमेर :-

- पश्चिमी राजस्थान के थार के मरूस्थल में 3162 वर्ग किलो. क्षेत्र (1900 वर्ग किमी. जैसलमेर में और 1269 किमी. बाड़मेर) में विस्तृत यह मरूउद्यान क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य में सबसे बड़ा अभ्यारण्य है।
- 8 मई, 1981 को राज्य सरकार ने एक अधिसूचना जारी कर इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया था।
- भारतीय वन जीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत पूर्ण संरक्षण प्राप्त राज्य पक्षी गोडावण इस अभ्यारण्य का मुख्य आकर्षण है। गोंडावन अब केवल इस मरूउद्यान में ही पाया जाता है।

5. सरिस्का वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- इसकी स्थापना 1955 में अलवर से 35 किमी दूर अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में की गई।
- यह अभ्यारण्य राजस्थान का दूसरा बाघ परियोजना क्षेत्र है। इसे 1979 बाघ रिजर्व क्षेत्र घोषित किया गया। यह 492 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है। 1982 में राज्य सरकार ने इसे राष्ट्रीय पार्क घोषित करने की अधिसूचना जारी की थी।

राजस्थान के वन्य जीव अभ्यारण्य

रामगढ़ विषधारी अभयारण्य -

- बूँदी जिले के विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों से निर्मित एक प्राकृतिक रूप से सुरक्षित यह अभयारण्य 307 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है।

राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल वन्यजीव अभयारण्य :-

- 1979 में राज्य सरकार द्वारा घोषित यह अभयारण्य कोटा, बूँदी, सवाई माधोपुर, धौलपुर तथा करौली में विस्तृत है।
- यह राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में विस्तृत है।
- यह घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध है।

जवाहर सागर अभ्यारण्य :-

- कोटा-बूँदी-चित्तौड़गढ़

शेरगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- बारां में स्थित इस वन क्षेत्र को 1981 में अभ्यारण्य घोषित किया गया। इसे मांपी की संरक्षण स्थली कहते है। परवन नदी इसमें से होकर गुजरती है।

भैंसरोड़गढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)

बस्सी अभ्यारण्य -

- चित्तौड़गढ

कैलादेवी अभ्यारण्य -

- यह अभ्यारण्य करौली एवं सवाईमाधोपुर जिले में स्थित है।

कुम्भलगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य :-

- अरावली पर्वतश्रृंखला के दक्षिण भाग में उदयपुर, राजसमंद एवं पाली जिलों में फैले इस अभ्यारण्य को क्षेत्रफल लगभग 608.57 वर्ग किमी. है। इसकी घोषणा 13 जुलाई, 1971 को की गई।
- यह देश का एकमात्र अभ्यारण्य है, जहाँ विलुप्त होती हुई **भेड़ियों की प्रजाति में प्रजनन** कराया जाता है।
- अभ्यारण्य में **चौसिंगा** जिसे स्थानीय भाषा में घंटेल कहते है, पाया जाता है। विश्व प्रसिद्ध रणकपुर जैन मंदिर कुंभलगढ़ अभ्यारण्य में ही स्थित है।

सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य :-

- 2 जनवरी, 1979 को इस अभ्यारण्य की स्थापना हुई। अभ्यारण्य का कुल क्षेत्रफल 422.94 वर्ग किमी है। यह प्रतापगढ़ जिले की धरियावाद तहसील व चित्तौड़गढ़ की बड़ी सादड़ी तहसील में हैं।
- इस अभ्यारण्य में यूब्लेफरिस नामक छिपकली पाई जाती है।

माउन्ट आबू अभ्यारण्य :-

- सिरोही जिले में स्थित वन क्षेत्र को 7 अप्रैल, 1960 को अभ्यारण्य घोषित किया गया।
- इस अभ्यारण्य में जंगली मुर्गे तथा **डिकिल्पटेरा आबून्सिस** नामक पादप जो विश्व में एकमात्र आबूपर्वत पर ही पाया जाता है, मिलते हैं।

जयसमंद वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- इस अभ्यारण की स्थापना 1955 में उदयपुर से करीब 52 किमी. दक्षिण-पूर्व में जयसमंद झील क्षेत्र में वन्यजीव की सुरक्षा के लिए की गई।
- इसके आस-पास रूठी रानी के महल एवं हवामहल प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

फुलवारी की नाल अभ्यारण्य :-

- यह अभ्यारण्य उदयपुर में 493 वर्ग किमी. में फैला हुआ है।
- यहाँ से मान्सी, वाकल व सोम नदी का उद्‌गम होता है। इसकी स्थापना 1983 में हुई।

सज्जनगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- उदयपुर रियासत के एक पुराने आखेट स्थल के लगभग 5.19 वर्ग किमी वन क्षेत्र को सन् 1987 में अभ्यारण्य घोषित।
- यह राजस्थान का सबसे छोटा अभ्यारण्य है।

टाड़गढ़- रावली वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- यह अभ्यारण्य पाली, अजमेर एवं राजसमंद जिले में स्थित है।
- इसमें बघेरा, रीछ, जरख, नीलगाय, गीदड़ आदि वन्यजीव पाये जाते है।

गजनेर पक्षी अभ्यारण्य :-

- बीकानेर, यह अभ्यारण्य बटबड़ पक्षी(इम्पीरियल सेन्डगाउज) के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इस रेत का तीतर भी कहते है।

ताल-छापर अभ्यारण्य :-

- चूरू जिले में सुजानगढ़ के निकट छापर गांव के पास 8 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत, स्थापना 1971 में की गई।
- यहाँ अभ्यारण्य काले हिरणों व प्रवासी पक्षी कुरजां का प्रजनन स्थल है। वर्षा के मौसम में इस अभ्यारण्य में एक विशेष प्रकार की नर्म घास उत्पन्न होती है, जिसे मोचिया साइप्रस रोटन्डस कहते हैं।

रामसागर वन विहार अभ्यारण्य :-

- धौलपुर, स्थापना नवम्बर, 1955 में की गई।

बंध बारेठा अभ्यारण्य :-

- भरतपुर जिले के बारेठा बंध (झील) के चारों ओर फैला यह अभ्यारण्य केवला देव राष्ट्रीय उद्यान से करीब 50 किमी. दूरी पर है। यहां जरख पाये जाते है।
- इसकी स्थापना की घोषणा अक्टूबर, 1985 में की गई।

नाहरगढ़ जैविक अभ्यारण्य :-

- नाहरगढ़ के पहाड़ी क्षेत्र में आमेर, जयगढ़ फोर्ट एवं नाहरगढ़ के बीच के क्षेत्र में 50 वर्ग किमी. क्षेत्र में यह अभ्यारण्य 1980 में स्थापित किया गया।
- इसमें राज्य का प्रथम जैविक उद्यान विकसित किया जा रहा है।

जमवारामगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य :-

- जयपुर जिले के जमवा रामगढ़ के समीप 300 वर्ग किमी. क्षेत्र में यह अभ्यारण्य विस्तृत है। इसकी स्थापना 31 मई, 1982 को की गई।
- जयपुर रियासत का पुराना शिकारगाह रहा है। इसमें चिंकारा नीलगाय, लंगूर, चीतल, मोर आदि वन्य जीव पाये जाते है।

सवाई मानसिंह वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- 1984 में जयपुर रियासत के अंतिम महाराजा सवाई मानसिंह के नाम पर रणथम्भौर राष्ट्रीय वन्यजीव अभ्यारण्य, सवाईमाधोपुर से सटे हुए क्षेत्र में स्थापित।

धावा (डोल) वन्यजीव अभ्यारण्य :-

- जोधपुर से 45 किमी. दूर जोधपुर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर धावा गांव के समीप स्थित इस अभ्यारण्य में राजस्थान के सर्वाधिक कृष्ण मृग मिलते हैं।
- इस अभ्यारण्य में से NH 112 गुजरता है।

माचिया सफारी पार्क :-

- सूर्य नगरी जोधपुर की पहाड़ियों के बीच कायलाना झील के किनारे यह वन्यजीव अभ्यारण्य नया विकसित किया गया है।
- यहां चिंकारा, काले हिरण, नीलगाय, आदि पाये जाते हैं। यह राजस्थान का मृगवन कहलाता है। यह देश का प्रथम राष्ट्रीय मरू वानस्पतिक उद्यान है।

राजस्थान के जंतुआलय

राज्य में वर्तमान में कुल पांच जंतुआलय है, जिनका विवरण निम्नानुसार हैं-

- **जयपुर जंतुआलय** - यह राज्य का सबसे पुराना जंतुआलय है। इसकी स्थापना 1876 में रामनिवास बाग में की गई।
- **उदयपुर जंतुआलय** - इसकी स्थापना 1878 में उदयपुर नगर में गुलाब बाग में की गई।
- **बीकानेर जंतुआलय**
- **जोधपुर जंतुआलय** की स्थापना जोधपुर के सार्वजनिक उद्यान में 1936 में की गई। यह अपनी पक्षी शाला के लिये विख्यात है। इस जंतुआलय में गोडावन पक्षियों का कृत्रिम प्रजनन केन्द्र स्थापित किया गया है।
- **कोटा जंतुआलय** - इसकी स्थापना 1954 में की गई। इसमें कोटा, झालावाड़, बूँदी एवं बारां जिलों में मिलने वाले पक्षियों को रखा जाता है।

राज्य के मृगवन

क्र. सं.	नाम	संबंधित जिला	स्थापना
1	चित्तौड़गढ़ दुर्ग मृगवन	चित्तौड़गढ़	1969
2	सज्जनगढ़ मृगवन	उदयपुर	1984
3	माचिया सफारी पार्क, कायलाना	जोधपुर	1985
4	संजय उद्यान, शाहपुरा	जयपुर	1986
5	पुष्कर मृगवन, पंचकुण्ड	अजमेर	1985
6	अशोक विहार मृगवन	जयपुर	1986
7	अमृता देवी मृगवन	जोधपुर	

निर्माण कैप्सूल

- राज्य में सर्वाधिक अभ्यारण्य उदयपुर जिले में है।
- राजस्थान वन्यजीव बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई।
- राज्य में बांध शिकार पर प्रतिबंध 1970 में लगाया गया।
- संपूर्ण राज्य में शिकार पर प्रतिबंध 1986 में लगाया गया।
- भारत में बांध परियोजना के सूत्रधार कैलाश सांखला जोधपुर के रहने वाले थे।
- कैलाश सांखला ने 'टाईगर' और 'रिटर्न ऑफ टाईगर' मैन ऑफ इंडिया) कहा जाता है। यह टाइगर परियोजना के प्रथम निदेशक थे।
- भारत में बाघों की संख्या सुनिश्चित करने के लिए 1 अप्रैल, 1973 को प्रोजेक्ट टाइगर नामक योजना चलाई गयी।
- ओरण वन्य पशुओं की शरण स्थली को कहा जाता है।
- उत्तर भारत का प्रथम सर्प उद्यान कोटा में स्थापित किया गया है।
- केवल सांखलिया (अजमेर) तथा सोरसन (बारां) ही दो ऐसे आखेट निषिद्ध क्षेत्र हैं जहाँ पर राष्ट्रीय मरू उद्यान के अतिरिक्त राजस्थान का राज्य पक्षी गोडावन पाया जाता है।
- रखत, कांकन, डांग आदि वनों के संरक्षण से संबंधित शब्द है काकड़ गांव की सीमा पर स्थितवन कहो कहा जाता है।
- रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क की मछली नामक बाघिन को सज्जनता के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया है।

आखेट निषिद्ध क्षेत्र

क्र.	नाम	जिला	क्र.	नाम	जिला
1	संथाल सागर	जयपुर	2	महलां	जयपुर
3	महलां	जयपुर	4	जरोदा	नागौर
5	रोतू	नागौर	6	धोरीमन्ना	बाड़मेर
7	जवाई बांध	पाली	8	सोरसन	बारां
9	रानीपुरा	टोंक	10	कनक सागर	बँदी
11	रामदेवरा	जैसलमेर	12	उज्जला	जैसलमेर
13	सांचौर	जालौर	14	मैनाल	चित्तौड़गढ़
15	संवतसर-कोटसर	चूरू	16	लोहावट	जोधपुर
17	डोली	जोधपुर	18	गुढ़ा विश्नोई	जोधपुर
19	फीटकाशनी	जोधपुर	20	ढेंचू	जोधपुर
21	खेजड़ली	जोधपुर	22	जम्मेश्वरजी	जोधपुर
23	साथीन	जोधपुर	24	जोड़ाबीड़	बीकानेर
25	दीयाना	बीकानेर	26	देशनोक	बीकानेर
27	मुकाम	बीकानेर	28	बज्जू	बीकानेर
29	बर्डोद	अलवर	30	जौड़िया	अलवर
31	साँखलिया	अजमेर	32	गंगवान	अजमेर
33	तिलोरा	अजमेर			

राज्य में वर्तमान में 33 आखेट/शिकार निषिध क्षेत्र है जिनका कुल क्षेत्रफल 26,719.94 वर्ग किमी. है।

- संवतसर - कोटसर (चूरू) राज्य का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला आखेट निषिध क्षेत्र है।
- जोधपुर में सर्वाधिक 7 आखेट निषिध क्षेत्र है। यहाँ स्थित जाम्मेश्वर राज्य का दूसरा सबसे बड़ा आखेट निषिध क्षेत्र है बीकानेर ने 5 व अजमेर में 3 आखेट निषिध क्षेत्र है।
- संथालसागर (जयपुर) राज्य का सबसे छोटा आखेट निषिध क्षेत्र है।

राजस्थान में सूखा एवं अकाल

- राजस्थान में अकाल का मुख्य कारण वर्षा की अनिश्चिता एवं अनियमितता है।
- राजस्थान के जलवायु की विषमता, वनों के स्वरूप, धरातल की स्थिति तथा अरावली श्रृंखला की दिशा मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने के कारण भी अकाल एवं सूखे की स्थिति रहती है।
- 1987 ई. का अकाल बीसवीं सदी का सबसे भयंकर अकाल था। इस अकाल ने त्रिकाल का रूप धारण का कर लिया था।
- **अकाल कई प्रकार के माने गये है-**
- **अन्नकाल** - जिसमें कृषि उपज नहीं होती है।
- **जलकाल** - इस अकाल में पानी का अभाव रहता है।
- **त्रिकाल** - इस प्रकार के अकाल में अन्न, जल व चारे तीनों का अभाव हो जाता है।

- विक्रम संवत् 1900-01 के अकाल को **सहसा-मूदसा** कहा गया है। 1783 में **चालीसा अकाल**, 1812-13 में **पंचकाल**, 1866-69 में **त्रिकाल** तथा 1899-1900 ई. (विक्रम संवत 1956) का **छपन्नया** अकाल राजस्थान में अकाल के कुछ प्रमुख उदाहरण है।
- राजस्थान में अकाल के बारे में लोक कहावतें भी प्रचलित है। 'तीजो कुरियो आठवां काल' अर्थात् यहाँ प्रतिवर्ष कुरिया (अर्द्ध अकाल) तथा प्रति आठवें वर्ष भयंकर अकाल पड़ता है।

1. सूखा-संभावित क्षेत्र कार्यक्रम :-

- वर्ष 1974-75 में प्रारम्भ सूखा संभावित कार्यक्रम में राज्य के 8 पूर्वी जिलों में शुरू किया गया। वर्तमान में यह कार्यक्रम जल ग्रहण के आधार पर राज्य के 11 जिलों में 32 खण्डों में चलाया जा रहा है।
- इस कार्यक्रम का उददेश्य सूखा संभावित क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को सुधारना। इसके लिए भूमि व जल संसाधनों का बेहतरीन उपयोग किया जाता है।

  अप्रैल,1999 से 75 प्रतिशत व्यय केन्द्र सरकार तथा 25 प्रतिशत व्यय राज्य सरकार द्वारा वन किया जाता है।

2. मरू- विकास कार्यक्रम :-

- राष्ट्रीय कृषि आयोग की सिफरिशो के आधार पर शत प्रतिशत केन्द्र प्रवर्तित यह कार्यक्रम प्रारम्भ में राज्य के 12 मरूस्थलीय जिलों में वर्ष 1977-78 से शुरू किया गया। 1 प अप्रैल, 1999 से नए प्रोजेक्टों के लिए केन्द्र व राज्य का अंश 75:25 रखा गया है।
- इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मरूस्थल को आगे बढ़ने से रोकना है, मरूस्थल क्षेत्र में पर्यावरण में सुधार लाना तथा उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग कर रोजगार के अवसर बढ़ाते हुए मरूस्थलीय क्षेत्रों के लोगों की आर्थिक दशा सुधारना है।

राजस्थान में पशु सम्पदा

राजस्थान पशु-सम्पदा मे काफी संपन्न व विकसित श्रेणी का माना जाता है जिसका अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ''कृषि पशु-पालन पर निर्भर है तो पशु पालन कृषि पर''। इनकी परस्पर निर्भरता समस्त भारत में अपना महत्व रखती है। लेकिन राजस्थान के संदर्भ मे वह ज्यादा प्रबल व प्रभावी मानी जा सकती है। राजस्थान पशु-सम्पदा मे काफी उन्नत व विकसित श्रेणी का माना जाता है। राजस्थान में शुष्क व अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों मे लगातार सूखे व अकाल की दशाओं के कारण जीवन-यापन मे पशुधन का विशेष सहयोग प्राप्त होता है।

पशुपालन से राज्य की सकल घरेलू उत्पत्ति मे लगभग 13% का योगदान प्राप्त होता है। अन्य सूचक जो भारतीय संदर्भ मे राजस्थान की महता को दर्शाते है, इस प्रकार है-

- राजस्थान मे देश के कुल दुग्ध उत्पादन का अंश 90%।
- राज्य मे पशुभार वहन शक्ति 35%।
- बकरी मे राजस्थान का भारत मे अंश 30%।
- ऊन में भारत में अंश 40%।
- पशु संख्या भारत की संख्या का लगभग 11%।

19वीं पशु गणना

राज्य की 19वीं पशुगणना वर्ष 2012 मे की गई 19वीं पशुगणना के अनुसार राज्य में 5.77 करोड़ पशु एवं 80.24 लाख मुर्गियाँ है। वर्ष 2007 की तुलना मे वर्ष 2012 में राज्य की पशु सम्पदा में 10.6 लाख अर्थात 1.89 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। राज्य में सर्वाधिक पशुधन बाड़मेर जिलें में है, जबकि न्यूनतम पशुधन धौलपुर जिलें मे है। राज्य में सार्वधिक पशुघनत्व डूंगरपुर जिलें में, जबकि न्यूनतम पशुघनत्व जैसलमेर जिले में है। 19वीं पशुगणना मे सर्वाधिक वृद्धि गायों में देखी गई, जबकि न्यूनतम वृद्धि ऊँट एवं गधे की रही। उल्लेखनीय है कि राज्य में पशुगणना का कार्य प्रति 5 वर्ष में राजस्व मण्डल अजमेर करता है।

राजस्थान मे पशु सम्पदा 19वीं पशुगणना के अनुसार

पशु	कुल संख्या	देश मे राज्य का स्थान	देश मे प्रथम	राज्य मे सर्वाधिक	राज्य में न्यूनतम
बकरी	216.65	प्रथम	राजस्थान	बाड़मेर	धौलपुर
गाय	133.24	पाँचवॉ	मध्यप्रदेश	उदयपुर	धौलपुर
भैंस	129.76	दूसरा	उत्तर प्रदेश	जयपुर	जैसलमेर
भेड़	90.79	तीसरा	आन्ध्र प्रदेश	बाड़मेर	बाँसवाड़ा
ऊँट	3.25	प्रथम	राजस्थान	जैसलमेर	प्रतापगढ़
सूअर	2.37	सत्रहवाँ	आसोम	भरतपुर	डूंगरपुर
गधे	0.81	पहला	राजस्थान	बाड़मेर	टोंक
घोड़े	0.377	चौथा	उत्तर प्रदेश	बीकानेर	डूंगरपुर

2012 की पशु संगठन के अनुसार राज्य में पशुओं की संख्या 577.3 लाख आँकी गई है। यह 2007 में 566.6 लाख रही थी। 2007-17 मे पशुओ की संख्या मे वृद्धि 10.7 लाख। राज्य में 2012 में गौवंश के पशु लगभग 1.33 करोड़, भेंड 0.91 तथा बकरी 2.7 करोड़ पाए गए। 2002-03 व पूर्व के अकालों में काफी पशु पारे-पानी के अभाव मे मौत के मुँह मे चले गए थे, जिसमें राज्य के पशुधन को भारी क्षति पहुंची थी।

- भारत में प्रथम पशुगणना दिसम्बर 1919 से अप्रैल 1920 के मध्य की गई।
- स्वतंत्र राजस्थान में 1951 में पशुगणना की गई।
- चार बीज उत्पादन फार्म - मोहनगढ़ (जैसलमेर)
- बतख चूजा उत्पादन केन्द्र - बांसवाड़ा

गौवंश

- भारत की समस्त गौ वंश का लगभग 8 प्रतिशत भाग राजस्थान में पाया जाता है।
- राजस्थान का देश में गौवंश की दृष्टि से पाँचवा स्थान है।
- सर्वाधिक-उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बीकानेर भीलवाड़ा।
- न्यूनतम - धौलपुर
- प्रमुख नस्लें : **सूत्र- मां थाका मेहसाना राहगीर।**
- राजस्थान गौशाला पिजंरापोल संघ, जयपुर यह गौशाला विकास कार्यक्रम की राज्य में शीर्ष संस्था।
- बस्सी (जयपुर) में गौवंश संवर्धन फार्म स्थापित।
- राज्य गौ सेवा आयोग-जयपुर, स्थापना 23 मार्च 1951
- दौसा व कोड़मदेसर (बीकानेर) में गौ सदन स्थापित किये गये।

गिर:-
- मूल रूप से गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित गिर वन व काठियावाड़ क्षेत्र में।
- राजस्थान में इसे गेंडा व अजमेरी नाम से जानते है।
- यह पशु द्विप्रयोजनीय है।
- अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध।
- राज्य में मुख्यत: अजमेर, किशनगढ़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ बूंदी में पायी जाती है।

थारपारकर :-
- **उत्पत्ति** - सिंध क्षेत्र व मालानी गांव (जैसलमेर)
- स्थानीय क्षेत्रों में इसे मालाणी या थारी नाम से जानते है।
- अधिक दूध, उत्पादन हेतु प्रसिद्ध।
- बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, सांचौर में।

कांकरेज :-
- मूल स्थान-गुजरात के कच्छ का रन क्षेत्र।
- भारत की सबसे भारी नस्ल मानी जाती है।
- बाड़मेर, सिरोही, पाली, सांचौर तथा नेहड़ क्षेत्र (जालौर)
- द्विप्रयोजनीय नस्ल (भारवाहन व दूध हेतु)

राठी :-
- मूल स्थान - राठ क्षेत्र-उत्तरी-पूर्वी राजस्थान
- यह लाल सिंधी व साहीवाल की मिश्रित नस्ल।
- इसे राजस्थान की कामधेनू भी कहते है।
- दूध उत्पादन हेतु प्रसिद्ध (सम्पूर्ण भारत में)
- मुख्यत: श्रीगंगानगर जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग। जैसलमेर के उत्तरी-पूर्वी भाग, बीकानेर के पश्चिमी भाग में।
- नोहर (हनुमानगढ़) में राठी के लिए गोवंश परियोजना केन्द्र व फर्टिलिटी की स्थापना।
- राठी प्रजनन केन्द्र-श्रीगंगानगर ।

नागौरी :-
- मूल स्थान-नागौर जिले का सुहालक क्षेत्र।
- इस नस्ल के बैल दौड़ने में तेज, भारवाहन व कृषि कार्यो में उत्तम क्षमता वाला।
- नागौर, जोधपुर जिले का उत्तरी-पूर्वी भाग। नोखा (बीकानेर), रूपनगढ़ (अजमेर)

हरियाणवी :-
- मूल स्थान - रोहतक, हिसार, गुडगाँव, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ चुरू, सीकर, टोंक, जयपुर।
- इस नस्ल के लिए कुम्हेर (भरतपुर) में वृषभ पालन केन्द्र।

मालवी :-
- मूल स्थान - मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र ।
- इस नस्ल के बैल भारवाही है तथा गाय कम दूध देती है।
- बाँसवाड़ा, डुंगरपुर, कोटा।

विदेशी नस्ल :-

जर्सी-
- मूल स्थान-अमेरिका
- बहुत कम उम्र में दूध देने लगती।
- दूध में वसा की मात्रा 4 प्रतिशत।
- यह राज्य के मध्य व पूर्वी राजस्थान में।

हॉलिस्टिन :-
- मूल स्थान - हौलैण्ड, अमेरिका
- सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल
- दूध में वसा की मात्रा 3.5 प्रतिशत।
- यह राज्य के मध्य व पूर्वी राजस्थान में।

रेडडेन :-
- उत्पत्ति - डेनमार्क 20 से 25 लीटर दूध

भैंस

- राज्य में सर्वाधिक भैंस की संख्या अलवर, जयपुर, भरतपुर, उदयपुर।
- न्यूनतम - जैसलमेर
- भैंस अनुसंधान एवं प्रजनन केन्द्र -वल्लभनगर (उदयपुर)

मुर्रा (खुण्डी)-
- राज्य की सबसे प्रसिद्ध भैंस नस्ल।
- राज्य में सर्वाधिक भैंस इसी नस्ल की।
- मूल स्थान - मोंटगोमरी (पाकिस्तान)।
- अधिक दूध देने के लिए प्रसिद्ध
- दूध में वसा की मात्रा 7.8 प्रतिशत।
- पूर्वी जिलों - अलवर, भरतपुर, धौलपुर, जयपुर,कोटा बूँदी।
- गंगानगर के नहरी क्षेत्र में पायी जाती है।
- कुम्हेर (भरतपुर) में मुर्रा नस्ल की भैंस का प्रजनन।

जाफराबादी:-
- मूल स्थान-गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र।
- श्रेष्ठ मादा जानवर का पुरस्कार जीत चुकी।
- गुजरात से लगे दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान के जिलों में पायी जाती है।

सुरती :-
- मूल स्थान-गुजरात
- उदयपुर तथा उसके आसपास के क्षेत्र में पाई जाती है।
- अन्य नस्लें : नागपुरी, बदावरी, रथ।

ऊँट वंश

- देश के कुल ऊँटों को राज्य में 70 प्रतिशत।
- सर्वाधिक-बाड़मेर, बीकानेर, हनुमानगढ़
- न्यूनतम-झालावाड़।
- जैसलमेर के पास नाचना का ऊँट सबसे श्रेष्ठ, यह बोझ ढोने हेतु उपयुक्त।
- गोमठ (फलौदी) का ऊँट सवारी हेतु उपयुक्त।
- ऊँट की उन्नत नस्ल को विकसित करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा जोड़नबीड (बीकानेर) में ऊँट प्रजनन कार्य संचालित किया जा रहा है। जहाँ केन्द्रीय ऊँट अनुसंधान संस्थान स्थित है।
- स्थापित-5 जुलाई 1984, ICRA द्वारा संचालित, ऊँट में सर्रा रोग पाया जाता है।

बीकानेरी -
- यह ऊँट की भारवाहक नस्ल है।
- क्षेत्र-बीकानेर, नागौर, जोधपुर, चुरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़।

जैसलमेरी :-
- इस नस्ल के ऊँट सवारी तथा दोड़ने में श्रेष्ठ है।
- जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर

कच्छी-सिंधी-अलवरी

अश्व

- राज्य का देश में सातवां स्थान।
- सर्वाधिक-बाड़मेर, जालौर, झालावाड़, उदयपुर जिले में
- न्यूनतम-बीकानेर, बांसवाड़ा जिले में।
- अश्व विकास कार्यक्रम सिवाना में संचालित
- बिलाड़ा (जोधपुर), सिवाना (बाड़मेर), मनोहर थाना (झालावाड़), बाली (पाली), जालौर, चित्तौड़ में अश्व प्रजनन केन्द्र।
- मारवाड़ अश्व प्रजनन एवं अनुसंधान संस्थान-केरू (जोधपुर)

मालाणी –
- बाड़मेर-घुड़दौड़ देश में प्रसिद्ध
- मालाणी नस्ल के घोड़े बाड़मेर के सिवाना व गुड़ामलाणी क्षेत्र में पाए जाते हैं जो उन्नत नस्ल के लिए सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध।

मारवाड़ी नस्ल
- राज्य में अधिकाश संख्या इसी नस्ल की
- मारवाड़ क्षेत्र में।

काठियावाड़ी नस्ल
- घुड़सवारी हेतु।
- इसका सिर अरबी नस्ल के घोड़े के समान।
- गुजरात से लगे क्षेत्र में (जालौर, सिरोही, उदयपुर)।

मुर्गी पालन

- सर्वाधिक – अजमेर, उदयपुर
- न्यूनतम – धौलपुर
- नस्लें – न्यू हैम्पशायर, रोड आइलैंड, एस्ट्रोबाइट (सर्वाधिक अण्डे देने वाली)
- उन्नत नस्ल की सर्वाधिक मुर्गियां अजमेर में पायी जाती है।
- राजस्थान की अण्डों को टोकरी-अजमेर
- राज्य में कुक्कुट रोग निदान एवं आहार विश्लेषण हेतु अजमेर, जोधपुर, कोटा तथा उदयपुर में प्रयोगशाला स्थापित की गई।
- अजमेर में मुर्गापालन प्रशिक्षण केन्द्र तथा राजकीय कुक्कुट प्रशिक्षण संस्थान (1988) की स्थापना की गई।
- राज्य में मुर्गीयों से संबंधित राष्ट्रीय बीज उत्पादन फार्म भीमपुरा (बांसवाड़ा) तथा कासिमपुर (कोटा) में।
- **कड़कनाथ योजना :-**बांसवाड़ा, कुक्कुट पालन की दृष्टि से

मत्स्य पालन

- राजस्थान में अन्तर्देशीय मत्स्य पालन होता।
- जयसमन्द – उदयपुर
- माही बजाज सागर-बाँसवाड़ा, गैब सागर- डुंगरपुर
- मछली पकड़ने की निषेद्ध ऋतु-16 जून से 21 अगस्त
- **राज्य में दो मत्स्य बीज उत्पादन Qkर्म**
  (A) कासिमपुरा (कोटा) (B) भीमपुरा (बांसवाड़ा)
- मत्स्य प्रशिक्षण विद्यालय -उदयपुर
- बड़ी तालाब (उदयपुर) में राज्य का पहला मत्स्य अभ्यारण्य बनाने की योजना।

निर्माण कैप्सूल

- राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंधन व प्रशिक्षण संस्थान – जामडोली (जयपुर)
- पशुपालन स्कूल-जयपुर, कोटा, जोधपुर
- पशु पोषाहार संस्थान-जामडोली (जयपुर)
- राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड-जामडोली (जयपुर), स्थापना 25 मार्च 1998
- राजस्थान राज पशुपालक कल्याण बोर्ड-जयपुर, स्थापना 13 अप्रैल 2005
- बस्सी (जयपुर)- राज्य में एकमात्र पशु सीरम बैंक।
- जैसलमेर के चांदन गांव में तुलमदर फॉर्म की स्थापना की गई जहाँ थारपारकर नस्ल के पशुओं को तैयार किये जाते हैं।
- बतख चूजा उत्पादन फॉर्म-बांसवाड़ा
- पशुपालन विभाग की स्थापना-1975
- पशुपालन व डेयरी विकास विभाग-2001
- भेडों की संख्या की दृष्टि से राज्य का देश में प्रथम स्थान।
- राज्य में भेड़ व ऊन प्रशिक्षण केन्द्र-जोधपुर
- राजस्थान राज्य सरकारी भेड़ व ऊन विपणन फेडरेशन की स्थापना 1977 में की गई।
- जोधपुर जिला राज्य का सबसे अधिक ऊन उत्पादक जिला इसके बाद क्रमश : बीकानेर व नागौर।
- **गधे व खच्चर**-सर्वाधिक-बाड़मेर, बीकानेर, न्यूनतम-दौसा

पशुओं के रोग
- खुरपका, मुंहपका, – गाय, बैल, भेड़, बकरी, भैस,
- सर्रा – ऊँट
- रानीखेत, पूनी पेचित – मुर्गी
- तरड़िया – भेड
- स्वाइन फीवर – सुअर
- राज्य का एकमात्र पशु विज्ञान व चिकित्सा महाविद्यालय-बीकानेर

एडमास योजना :-
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा
- 1 अप्रैल 1999 से
- गाय व भैंस वंश से संबंधित है।

गोपाल योजना :-
- 2 अक्टूबर 1990 से
- राज्य के दक्षिणी-पूर्वी 10 जिलों में -कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, टोंक, सवाईमाधोपुर, धौलपुर

कामधेनु योजना :-
- 1997-98 से।
- गौशालाओं को उन्नत नस्ल के दूधारू पशुओं का प्रजनन बनाने हेतु।
- राठी,थारपारकर, गीर व कांकरेल नस्ल की नस्लों को संरक्षित करने का कार्य किया जा रहा है।

राजस्थान राज्य डेयरी फेडरेशन

- राज्य में दुग्ध विकास से संबंधित शीर्ष संस्था
- स्थापना – 1977 में।
- राज्य का प्रथम प्लाज्मा केन्द्र बस्सी (जयपुर) में, दूसरा प्लाज्मा केन्द्र नारवा खींचियान (जोधपुर)
- राष्ट्रीय सम विकास योजना के तहत अकलेरा व डग (झालावाड़) में दो अवशीतन केन्द्र लगाए गये।
- राजस्थान की पहली महिला दुग्ध उत्पादकता सहकारी समिति भोजसर गांव (बीकानेर) में।

- राजस्थान गौ सेवा संघ अजमेर में गौ अभ्यारण्य स्थापित किया जा रहा है।
- उरमूल डेयरी - बीकानेर
- गंगमूल डेयरी - श्रीगंगानगर
- वरमूल डेयरी - जोधपुर
- राज्य में विश्व बैंक की सहायता से राजस्थान राज्य की डेयरी विकास निगम (1975) की स्थापना की गई।
- राज्य की सबसे पुरानी डेयरी पद्मा डेयरी (अजमेर में)

राज्य में डेयरी Qksडरेशन :-

- राज्य में दुग्ध विकास से संबंधित शीर्ष संस्था
- स्थापना - 1977 में।
- राज्य में डेयरी फेडरेशन के अधीन 4 पशुआहार संयंत्र :-
  - झोटवाड़ा (जयपुर)
  - नदबई (भरतपुर)
  - तबीजी (अजमेर)
  - जोधपुर

पशु प्रजनन केन्द्र

- डग (झालावाड़)-गी, मालवी-गाय, मुर्रा-भैंस नस्ल हेतु।
- कुम्हेरे (भरतपुर)-हरियाणवी-गाय, मुर्रा-भैंस
- रामसर (अजमेर)-गीर-गाय, मुर्रा, भैंस
- जर्सी गाय व मुर्रा भैंस हेतु गोवंश संवर्धन फार्म बस्सी RCDF (जयपुर) द्वारा संचालित।
- राठी गाय हेतु गोवत्स परिपालन केन्द्र-नोहर (हनुमानगढ़)
- थारपारकर नस्ल हेतु केन्द्र केन्द्र सरकार द्वारा संचालित केंन्द्रिय पशु प्रजनन केन्द्र सुरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
- थारपारकर गाय विकास या प्रजनन केन्द्र-किशनगढ़ (अजमेर)
- राठी गाय शोध केन्द्र-अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)
- कांकरेज गाय प्रजनन केन्द्र-चौहटन (बाड़मेर)

निर्माण IAS